

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

डॉ. अबुल पाकिर जैनुलाब्दीन अब्दुल कलाम का जन्म 15 अक्तूबर, 1931 को तमिलनाडु के रामेश्वरम में हुआ था। उनके पिता जैनुलाब्दीन नाविक थे और स्थानीय मस्जिद के इमाम भी थे। उनकी माता, आशियम्मा गृहणी थीं। डॉ. अब्दुल कलाम ने अपने बचपन के दिनों को याद करते हुए लिखा है कि यद्यपि वे पांचवी कक्षा में ही पढ़ रहे थे, परन्तु उस समय भी परिवार में उनका विशेष स्थान था, क्योंकि वे परिवार के सबसे छोटे सदस्य थे। उन दिनों रामेश्वरम में बिजली की व्यवस्था नहीं थी और शाम को मात्र दो घंटे के लिए अर्थात् 7 बजे से 9 बजे तक कैरोसिन का छोटा सा लैंप जलाकर रोशनी की जाती थी। हालांकि, डॉ. कलाम की माँ ने उन्हें रोजाना एक छोटा कैरोसिन लैंप दिया करती थी जिससे डॉ. कलाम रात के 11 बजे तक पढ़ पाते थे।

डॉ. कलाम ने श्वार्टज उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, रामानाथपुरम से शिक्षा ग्रहण की। तत्पश्चात, उन्होंने सेंट जोसफ कॉलेज, तिरुचिरापल्लि में प्रवेश लिया, जहां से उन्होंने 1954 में भौतिकी में स्नातक की डिग्री प्राप्त की। इसके बाद, डॉ. कलाम ने मद्रास प्रौद्योगिकी संस्थान से एरोनॉटिकल इंजीनियरिंग में विशेषज्ञता प्राप्त की।

डॉ. कलाम ने भारत के प्रथम स्वदेशी उपग्रह प्रक्षेपण यान (एसएलवी-III) के विकास में परियोजना निदेशक के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जुलाई, 1980 में इसी यान द्वारा रोहिणी उपग्रह को पृथ्वी की कक्षा में सफलतापूर्वक प्रक्षेपित किया गया। इस सफलता ने भारत को स्पेस क्लब के विशिष्ट सदस्यों में शामिल कर दिया। उन्हीं की देख-रेख में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के प्रक्षेपण यान कार्यक्रम, विशेष रूप से पीएसएलवी का विकास हुआ। दो दशकों तक इसरो में कार्य करने तथा प्रक्षेपण यान प्रौद्योगिकी में विशेषज्ञता हासिल करने के उपरांत, डॉ. कलाम ने रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) में इसके एकीकृत गाइडेड मिसाइल विकास कार्यक्रम (आईजीएमडीपी) के मुख्य कार्यकारी के रूप में देश में ही निर्मित गाइडेड मिसाइल के विकास का दायित्व संभाला। उन्होंने अग्नि और पृथ्वी प्रक्षेपास्त्रों के विकास और इनका प्रयोग प्रारंभ करने के साथ-साथ विविध संस्थानों के परस्पर सहयोग से सामरिक महत्व की प्रौद्योगिकियां देश में ही विकसित करने की क्षमता बढ़ाने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। डॉ. कलाम ने रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार के रूप में कार्य किया और जुलाई, 1992 से दिसम्बर, 1999 तक वे रक्षा अनुसंधान एवं विकास विभाग के सचिव रहे। इस दौरान, सामरिक प्रक्षेपण प्रणालियों के सशस्त्रीकरण का कार्य उन्हीं की देख-रेख में संपन्न हुआ और उन्होंने परमाणु ऊर्जा विभाग के सहयोग से पोखरण-II परमाणु परीक्षणों में अग्रणी भूमिका निभाई। इन्हीं परीक्षणों के परिणामस्वरूप, भारत परमाणु हथियारों की शक्ति से संपन्न राष्ट्र बन गया। उन्होंने विविध विकास कार्यों और मिशन परियोजनाओं, जैसे हल्के लड़ाकू विमानों के विकास की प्रक्रिया को आगे बढ़ाकर रक्षा प्रणालियों के क्षेत्र में आत्म-निर्भरता प्राप्त करने पर बल दिया।

प्रौद्योगिकी सूचना, पूर्वानुमान एवं आकलन परिषद (टीआईएफएसी) के अध्यक्ष के नाते तथा विशिष्ट कोटि के वैज्ञानिक के रूप में डॉ. कलाम ने 500 विशेषज्ञों के सहयोग से टेकनॉलॉजी विजन 2020 अर्थात् देश की समग्र प्रौद्योगिकी नीति तैयार की। इसके अंतर्गत, विकासशील भारत को विकसित बनाने की रूपरेखा प्रस्तुत की गई। डॉ. कलाम ने नवम्बर, 1999 से नवंबर, 2001 तक कैबिनेट मंत्री के रैंक में भारत

सरकार के प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार के रूप में भी कार्य किया। इस दौरान उन्होंने अनेक विकासशील कार्यक्रमों के लिए नीतियों, सामरिक नीतियों और लक्ष्यों का निर्धारण किया। डॉ. कलाम, मंत्रिमंडल की वैज्ञानिक सलाहकार समिति के पदेन अध्यक्ष भी रहे और इस हैसियत से उन्होंने इंडिया मिलेनियम मिशन 2020 को मूर्त रूप देने में अग्रणी भूमिका निभाई।

अपने अकादमिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए डॉ. कलाम ने नवम्बर, 2001 से चेन्नई के अण्णा विश्वविद्यालय में प्रौद्योगिकी एवं सामाजिक परिवर्तन के प्रोफेसर के रूप में कार्य आरंभ किया। यहां वे शिक्षण के साथ-साथ शोध कार्यों में भी शामिल रहे। परंतु स्वयं के लिए उन्होंने जो महत्वपूर्ण लक्ष्य निर्धारित किया, वह था देशभर के उच्च विद्यालय स्तर के विद्यार्थियों से मुलाकात कर देश के युवजन के मन में राष्ट्रीय विकास की लौ जगाना।

डॉ. कलाम के वैज्ञानिक ज्ञान के अतिरिक्त, उनका साहित्यिक योगदान भी उल्लेखनीय है। उनकी लिखी चार पुस्तकें—“विंग्स ऑफ फायर”, “इंडिया 2020—ए विजन फॉर द न्यू मिलेनियम”, “माई जर्नी” और “इग्नाइटेड माइंड्स—अनलीशिंग द पावर विदइन इंडिया”—भारत के साथ-साथ विदेशों में बसे भारतीयों के घर-घर में पढ़ी जा रही हैं। इन पुस्तकों का अनुवाद कई भारतीय भाषाओं में हो चुका है।

डॉ. कलाम भारत के अत्यंत विशिष्ट वैज्ञानिकों में से एक थे। उन्हें 40 विश्वविद्यालयों और संस्थाओं से डॉक्ट्रेट की मानद उपाधियां प्राप्त करने का अनूठा श्रेय मिला। डॉ. कलाम को प्रतिष्ठित नागरिक सम्मानों से भी अलंकृत किया गया। 1981 में उन्हें पद्म भूषण, 1990 में पद्म विभूषण और 1997 में देश का सर्वोच्च नागरिक सम्मान अर्थात् भारत रत्न प्रदान किया गया। डॉ. कलाम को अनेक अन्य सम्मान भी प्राप्त हुए और वे अनेक शैक्षणिक संस्थानों के फेलो भी रहे।

25 जुलाई, 2002 को डॉ. कलाम भारत के 11वें राष्ट्रपति बने और इस पद पर वे 2007 तक रहे। उन्हें सत्तारूढ़ दल के साथ-साथ विपक्षी दल के समर्थन से भारत का राष्ट्रपति निर्वाचित होने का अनूठा श्रेय भी प्राप्त है। पांच वर्ष का अपना कार्यकाल पूरा करने के बाद, डॉ. कलाम सामान्य जीवन जीने लगे और शिक्षण, लेखन तथा लोक सेवा के क्षेत्र में सक्रिय रहे।

27 जुलाई, 2015 को भारतीय प्रबंधन संस्थान, शिलांग, मेघालय में छात्रों को “क्रिएटिंग ए लिवेबल प्लैनेट अर्थ” (अर्थात् पृथ्वी को वास योग्य ग्रह बनाना) विषय पर व्याख्यान देते हुए हृदय गति रुक जाने से डॉ. कलाम का निधन हो गया।

डाक विभाग, डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम पर एक स्मारक डाक-टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार :-

मूलपाठ	: इंटरनेट से प्राप्त सामग्री पर आधारित।
डाक-टिकट / प्रथम दिवस	: कमलेश्वर सिंह
आवरण	
विरूपण	: अलका शर्मा



तकनीकी आंकड़े TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	500 पैसा
Denomination	:	500 p
मुद्रित डाक-टिकटें	:	6.0 लाख
Stamps Printed	:	0.6 Million
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक-टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास हैं।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the stamp, first day cover and information brochure reserved with the Department.

Dr. A.P.J. ABDUL KALAM

Dr. Avul PakirJainulabdeen Abdul Kalam was born on 15th October 1931 at Rameswaram in Tamil Nadu. His father, Jainulabdeen, was a boat owner and also an imam of a local mosque. His mother, Ashiamma, was a housewife. Remembering his childhood, he has written that even though he was studying in the Vth standard, he had a special place in his home. There used to be no electricity and his house was lit by a kerosene lamp between 7PM to 9 PM every evening. However, his mother provided him with a small kerosene lamp everyday so that he could study up to 11 PM.

After completing his education at the Schwartz Higher Secondary School, Ramanathapuram, Kalam attended Saint Joseph's College, Tiruchirappalli from where he graduated in Physics in 1954. Thereafter he did specialization in Aeronautical Engineering from Madras Institute of Technology.

Dr. Kalam made significant contribution as Project Director during development of India's first indigenous Satellite Launch Vehicle (SLV-III) which successfully injected the Rohini satellite in the near earth orbit in July, 1980 and made India an exclusive member of the Space Club. He was responsible for the evolution of Indian Space Research Organisation (ISRO)'s launch vehicle programme, particularly the PSLV configuration. After working for two decades in ISRO and mastering the launch vehicle technologies, Dr. Kalam took up the responsibility of developing Indigenous Guided Missiles at Defence Research and Development Organisation (DRDO) as the Chief Executive of Integrated Guided Missile Development Programme (IGMDP). He played a key role in the development and operationalisation of AGNI and PRITHVI Missiles and for building indigenous capability in critical technologies through networking of multiple institutions. He was the Scientific Advisor to Defence Minister, and, Secretary, Department of Defence Research & Development from July 1992 to December 1999. During this period he monitored the weaponisation of strategic missile systems, and led the Pokhran-II nuclear tests in collaboration with Department of Atomic Energy, which made India a nuclear weapon State. He also provided thrust to self-reliance in defence systems by progressing multiple development tasks and mission projects, such as, Light Combat Aircraft.

As Chairman of 'Technology Information, Forecasting and Assessment Council' (TIFAC) and as an eminent scientist, he led the country with the help of 500 experts to arrive at Technology Vision 2020 providing a road map for transforming India from the present developing status to a developed nation.

Dr. Kalam also served as the Principal Scientific Advisor to the Government of India, in the rank of Cabinet Minister, from November, 1999 to November, 2001 and was responsible for evolving policies, strategies and missions for many development applications. Dr. Kalam was also the Ex-officio Chairman, of the Scientific Advisory Committee to the Cabinet and piloted the India Millennium Mission 2020.

Dr. Kalam then took up academic pursuit as Professor, Technology & Societal Transformation at Anna University, Chennai from November 2001 and was involved in teaching and research tasks. Above all, he took up the mission of igniting the young minds of the country for national development by meeting high school students across the country and interacting with them.

Besides Dr. Kalam's scientific temper, his literary pursuits have also been illustrious. Dr. Kalam's four books - "Wings of Fire", "India 2020 - A Vision for the New Millennium", "My Journey" and "Ignited Minds - Unleashing the power within India" have become household names in India and among Indian nationals abroad. These books have been translated into many Indian languages.

Dr. Kalam was one of the most distinguished scientists of India with the unique honour of having received honorary doctorates from 40 universities and institutions. He was awarded the coveted civilian awards, namely, Padma Bhushan in 1981, Padma Vibhushan in 1990, and the highest civilian award Bharat Ratna in 1997. He was recipient of several other awards and also was fellow of many professional institutions.

Dr. Kalam became the 11th President of India on 25th July, 2002 and remained in office till 2007. He has the distinction of being elected President of India with the support of both the ruling party and the opposition party. After serving a term of five years, he returned to his civilian life remaining active in the fields of education, writing and public service.

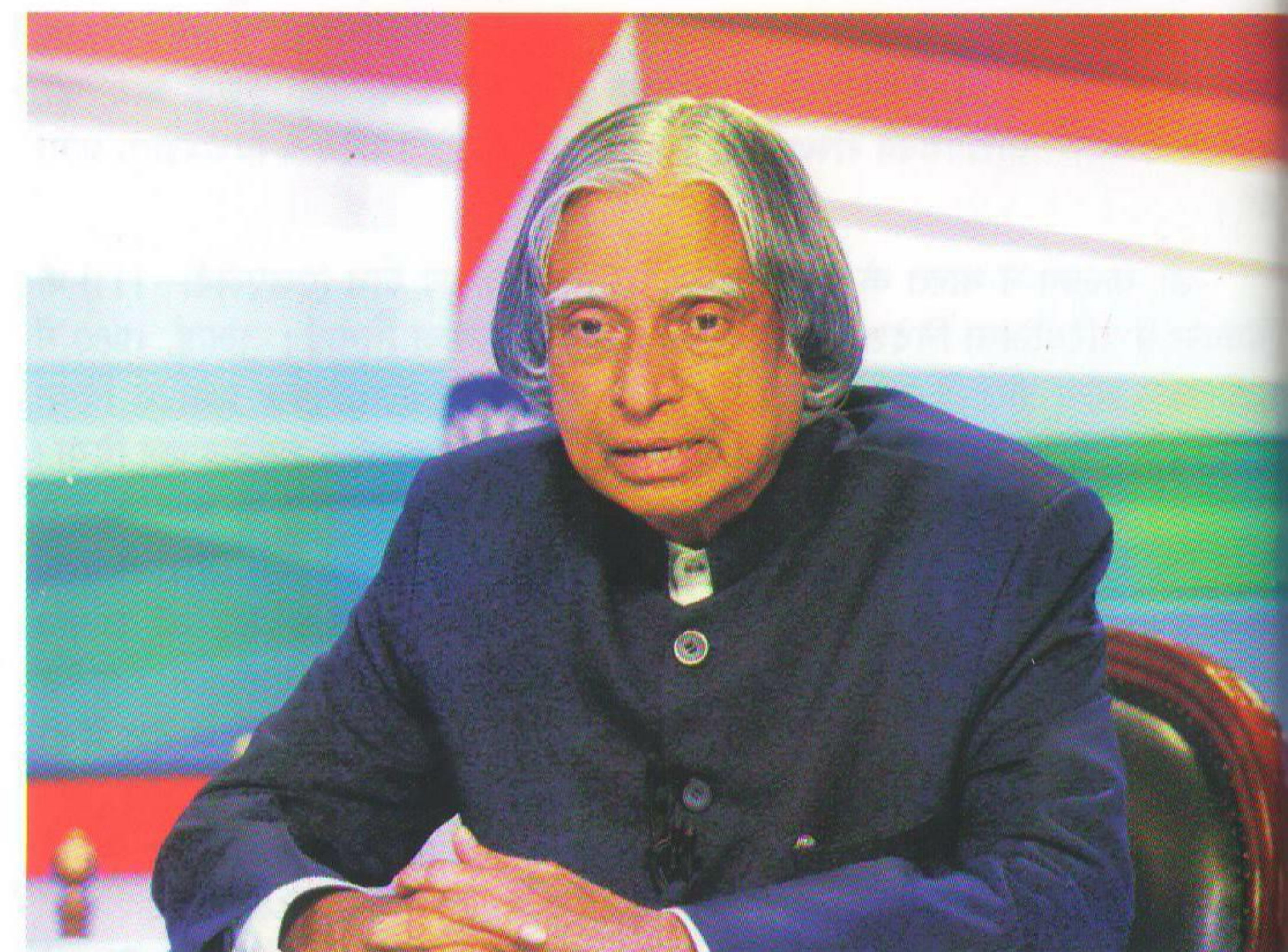
Dr. Kalam passed away due to a cardiac arrest while delivering a lecture on "Creating a Liveable Planet Earth" to the students at the Indian Institute of Management Shillong, Meghalaya on 27th July, 2015.

The Department of Posts is pleased to release a commemorative postage stamp on Dr. A. P. J. Abdul Kalam.

Credits:-

Text	: Based on the material obtained from Internet
Stamp/FDC	: Kamleshwar Singh
Cancellation	: Alka Sharma

भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS
INDIA



डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम
Dr. A.P.J. ABDUL KALAM

विवरणिका BROCHURE